

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 14, 2 कुरिन्थियों 13, समापन अपील

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 14, 2 कुरिन्थियों 13, समापन अपील है।

अब हम कुरिन्थियों से पौलुस की अंतिम अपील पर आ रहे हैं, क्योंकि हम पुस्तक के अंतिम अध्याय, जो कि अध्याय 13 है, को देखते हैं।

यह अध्याय पुस्तक के अंतिम भाग का समापन करता है, जो 12:14 से शुरू होता है। यह पॉल की वादा की गई यात्रा से संबंधित है, जो जल्द ही होने वाली थी। पॉल को पैसे या कुरिन्थियों की संपत्ति की चिंता नहीं थी।

इसके बजाय, वह उनसे एक अभिभावक जैसा प्यार करता था, उनसे लाभ कमाने के बजाय खुद को देना चाहता था। फिर भी, कुछ लोग थे जो उसके इरादों पर सवाल उठाते थे। हालाँकि वह उनसे बहुत प्यार करता था, फिर भी वे उचित तरीके से उसका बदला नहीं दे रहे थे।

उन्हें लगा कि वह उनका शोषण कर रहा है, और ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पॉल के विरोधियों ने विभाजन पैदा किया था, चर्च में विभाजनकारी भावना लाई थी, और इस तरह, नैतिक अव्यवस्था का खतरा पैदा किया था। पॉल इस समस्या से सख्ती से निपटने के लिए तैयार था, अगर उसकी विचार यात्रा के दौरान स्थिति अपरिवर्तित रही। इसलिए, वह पाठकों को चेतावनी देता है कि जब वह आएगा, तो वह आवश्यक होने पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करेगा।

तो यही हम 2 कुरिन्थियों अध्याय 13 में देख रहे हैं। आइये अब अध्याय पढ़ें। 2 कुरिन्थियों अध्याय 13।

यह आखिरी बार है जब मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। हर तथ्य की पुष्टि दो या तीन गवाहों की गवाही से होनी चाहिए। मैंने पहले भी कहा था जब मैं दूसरी बार उपस्थित था, और हालाँकि अब अनुपस्थित हूँ, मैं उन लोगों से पहले ही कह देता हूँ जिन्होंने अतीत में पाप किया है, और बाकी सभी से भी, कि अगर मैं फिर से आऊँगा, तो मैं किसी को नहीं छोड़ूँगा।

क्योंकि तुम उस मसीह का प्रमाण ढूँढ़ते हो, जो मुझ में बोलता है, और जो तुम्हारे लिये निर्बल नहीं, वरन तुम में सामर्थी है। क्योंकि वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया, तौभी परमेश्वर की सामर्थ से जीवित है। इसलिये कि हम भी उसमें निर्बल होकर, तौभी परमेश्वर की सामर्थ से जो तुम्हारी ओर है, उसके साथ जीवित हैं।

अपने आप को परखो कि तुम विश्वास में हो या नहीं, अपने आप को परखो, या अपने बारे में यह नहीं पहचानते कि यीशु मसीह तुम में है, जब तक कि तुम परीक्षा में असफल न हो जाओ। लेकिन

मुझे भरोसा है कि तुम महसूस करोगे कि हम खुद परीक्षा में असफल नहीं होते। अब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि तुम कोई गलत काम न करो, न ही हम खुद को स्वीकृत दिखाएँ, बल्कि यह कि तुम वही करो जो सही है, भले ही हम अयोग्य ही क्यों न दिखें।

हम जो कर सकते हैं, क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, परन्तु सत्य के लिये ही कर सकते हैं। क्योंकि जब हम निर्बल होते हैं, तब हम आनन्दित होते हैं, परन्तु तुम बलवन्त हो। और हम यह भी प्रार्थना करते हैं, कि तुम इस में सिद्ध हो जाओ।

इसी कारण मैं ये बातें अनुपस्थित रहते हुए लिख रहा हूँ, कि उपस्थित होने पर मुझे उस अधिकार के अनुसार कठोरता न करनी पड़े, जो प्रभु ने मुझे बनाने के लिये दिया है, न कि तोड़ने के लिये। अन्त में, हे भाइयो, आनन्दित रहो, सिद्ध बनो, ढाढ़स बाँधो, एक मन रहो, मेल से रहो, और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। पवित्र चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार करो, सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार करते हैं।

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की संगति तुम सब के साथ रहे। यहाँ अब, हम देखते हैं कि पौलुस धीरे-धीरे पत्र के अंत की ओर आ रहा है, और पौलुस कुरिन्थ के लिए एक विचार यात्रा की योजना बना रहा है। जैसे-जैसे पौलुस कुरिन्थियों को लिखे अपने पत्र के अंत के करीब पहुँचता है, वह अपने विचार यात्रा की तैयारी करता है; हम इसे अध्याय 12, पद 14 में देखते हैं।

और इसलिए, उन्हें उसके आने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस उद्देश्य से, पौलुस अपने भविष्य के आचरण की प्रकृति को बताते हुए शुरू करता है, जो उसके मंत्रालय के मूल सिद्धांतों के अनुरूप है, जिसे उसने अध्याय 12 के 14 से 18 वें श्लोक में सूचीबद्ध या रेखांकित किया है। लेकिन वह अभी भी नैतिक और आध्यात्मिक स्थितियों के बारे में बहुत आशंकित है जिसमें वह उन्हें पाएगा।

आप इसे अध्याय 12:19 से 21 में देख सकते हैं। वे निश्चित हो सकते हैं कि जब वह आएगा, तो वह अपने अनुशासन में उतना ही दृढ़ होगा जितना उनकी परिस्थिति की मांग है। उन्हें पश्चाताप करना चाहिए, क्योंकि उसकी प्रार्थना उनके विश्वास की पूर्णता के लिए है।

पौलुस ने फिर से क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे मसीह से उनके बीच अपनी सेवकाई के संबंध में अपील की। यही हम 13:1 से 10 में देखते हैं। इसलिए, अब हम जो देख रहे हैं उसे पौलुस के अंतिम तर्क के रूप में देखा जा सकता है।

यह आम तौर पर न्यायिक या फॉरेंसिक बयानबाजी के साथ जारी रहता है जिसका हमने पहले उल्लेख किया है। वह उनका बचाव करता है, और वह उन पर आरोप लगाता है। लेकिन अब इसमें जानबूझकर किए गए तत्वों, जानबूझकर किए गए बयानबाजी के साथ मिलाया जाता है और परोसा जाता है।

यही वह जगह है जहाँ आप चाहते हैं कि कोई व्यक्ति कोई निर्णय ले, लोग अपना मन बदलें, या अपना व्यवहार बदलें। उन्होंने अपना पूरा भाषण समाप्त कर लिया है, और उन्होंने सामान्य

बातचीत फिर से शुरू कर दी है। इसके द्वारा, उनका मतलब एक ऐसे मामले को स्पष्ट करना है जो जाहिर तौर पर अभी भी कोरिंथियों को परेशान करता है, और वह है उनके वित्तीय समर्थन से इनकार करना।

इसलिए, पद 14 से 18 में पौलुस अपनी रक्षात्मक मुद्रा को त्यागकर आक्रामक हो जाता है। वह अध्याय 12:18 से 21 में कुरिन्थ की अपनी अगली यात्रा पर मिलने वाले व्यवहार के बारे में अपनी आशंकाओं को व्यक्त करता है। इसलिए, अब उसकी बयानबाजी की रणनीति उन्हें रक्षात्मक स्थिति में लाना है।

वह न्यायालय की भाषा का उपयोग करता है, और सबूत की मांग एक चेतावनी में बदल जाती है, जो 13, 1 से 4 में एक आवेदन के साथ समाप्त होती है। आइए इसे फिर से देखें, 13, 1 से 4। यह तीसरी बार है जब मैं आपके पास आ रहा हूँ। दो या तीन गवाहों के मुँह से, क्या हर शब्द स्थापित हो जाएगा? मैंने आपको पहले भी बताया था, और मैं आपको फिर से बता रहा हूँ, अगर मैं दूसरी बार मौजूद होता, तो मैं अनुपस्थित रहता, अब मैं उन्हें लिखता हूँ, इसलिए मैंने उन सभी को देखा है कि अगर मैं फिर से आता हूँ, तो मैं नहीं छोड़ूँगा। चूँकि आप मुझमें मसीह के बोलने का सबूत ढूँढ़ रहे हैं, इसलिए हम आपको वह बताते हैं जो हम नहीं हैं, लेकिन आप में शक्तिशाली है।

क्योंकि यद्यपि उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह कमज़ोरी के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया था, फिर भी वह परमेश्वर की शक्ति से जीवित है। क्योंकि हम भी उसमें कमज़ोर हैं, लेकिन हम जीवित रहेंगे। इसलिए, वह अदालती भाषा का उपयोग करता है।

तो, यह खंड 5 से 10 के साथ समाप्त होता है। तो, बयानबाजी निष्कर्ष में एक भावनात्मक अपील शामिल है। पॉल एक भावनात्मक अपील करता है।

वैसे, पॉल एक अच्छा उपदेशक था, क्योंकि वह जानता था कि अपना संदेश कैसे शुरू करना है और उसे पता था कि अपना संदेश कैसे खत्म करना है। वह एक भावनात्मक अपील के साथ समाप्त करता है। और उसके साथ ही उसका बचाव समाप्त हो जाता है।

कुरिन्थियों के साथ पूर्ण मेलमिलाप हमेशा से ही उनका लक्ष्य रहा है। उन्होंने उनके साथ पूर्ण पुनर्मिलन के लिए सभी बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया है। प्रेरित के रूप में पॉल की सबसे बड़ी खूबी उनका तर्क है।

इसलिए, वह उन्हें बताता है कि जब वह कुरिन्थ पहुँचेगा तो उसे क्या उम्मीदें होंगी। इसलिए, पद 1 से, हम देखते हैं कि पौलुस अब क्या कह रहा है। पद 1 में यह तीसरी बार है।

वह अपराधियों से निपटेगा। उसने कहा कि किसी भी आरोप को कायम रखा जाना चाहिए। और बेशक, आप जानते हैं, पॉल अक्सर बाइबल का हवाला देते हैं कि दो या तीन गवाहों के मुँह से सच्चाई स्थापित होगी।

इसलिए, पॉल कहते हैं, देखो, हम देखेंगे कि हम वहाँ क्या बनाते हैं। और अगर हम दो या तीन गवाहों के मुँह से पुष्टि करते हैं कि कुछ गलत है, तो हम उससे निपटेंगे। इसलिए, 12:14 और 20 से 21 में बार-बार दोहराए गए जोर के साथ, पॉल ने घोषणा की कि वह आने के लिए तैयार है।

वह निश्चित रूप से आ रहा है, कम से कम इस बार तो। उसने उन्हें बताया कि वह पहले भी आ रहा था, लेकिन वह नहीं आया। और यही एक समस्या बन गई।

उन्होंने कहा, मैं निश्चित रूप से आ रहा हूँ। और जब मैं आऊँगा, तो मैं गलत अपराधियों को दंडित करूँगा। उन्होंने व्यवस्थाविवरण अध्याय 19, श्लोक 15 में कानूनी सिद्धांत का हवाला दिया, जिसमें कहा गया है कि हर मामले को दो या तीन गवाहों की गवाही से स्थापित किया जाना चाहिए।

अब, ग्रीको-रोमन कानून में यह अज्ञात है। ग्रीको-रोमन कानून में ऐसा कुछ नहीं हुआ। व्यवस्थाविवरण 19, 15 का उद्देश्य केवल एक गवाही के आधार पर अभियुक्त को दोषी ठहराने से रोकना था, ताकि यह झूठे गवाह पर दुर्भावनापूर्ण आरोप न हो।

यह सिद्धांत अब रब्बी न्यायशास्त्र में अपनाया गया है। नया नियम इसे चर्च अनुशासन पर लागू करता है। मत्ती 18, पद 16, 1 तीमुथियुस 5, पद 19, और कुछ अन्य उदाहरण।

अब सवाल यह है कि क्या पौलुस के मन में चर्च का मुकदमा था जिसमें औपचारिक आरोपों की जांच की जाएगी और उनका फैसला किया जाएगा? क्या वह अदालत लगाने जा रहा था? अगर हाँ, तो गवाह कौन थे? कुछ कुरिन्थियों ने एक दूसरे के खिलाफ गवाही दी? खैर, पौलुस ने यह सब नहीं बताया। उसने बस इतना कहा, मैं कोई भी निर्णय लेने से पहले यह सुनिश्चित करने जा रहा हूँ कि पर्याप्त सबूत हैं। इसलिए, अब वह पद दो में चेतावनी दोहराता है।

वह कहता है, मैंने पहले ही तुमसे कहा था जब मैं दूसरी बार तुम्हारे साथ था। और अब, जब मैं दूर हूँ, तब भी मैं पहले से कह रहा हूँ कि जब मैं फिर से आऊँगा, तो मैं किसी को भी नहीं छोड़ूँगा जिसने अपने पिछले पाप किए हैं या जारी रखे हैं। अब, यहाँ वर्णित दो यात्राएँ संभवतः अध्याय दो, श्लोक एक की दूसरी दर्दनाक यात्राएँ हैं।

और तीसरा अब वह है जिसकी वह आशा करता है। उसने कहा कि जिन लोगों ने पहले पाप किया था, वे निश्चित रूप से 12:21 में वर्णित लोगों को संदर्भित करते हैं, लेकिन हम किसी अन्य की पहचान नहीं जानते हैं। लेकिन यह निश्चित है कि पौलुस कहता है कि जिन लोगों ने पाप किया है, उन सभी का न्याय किया जाएगा।

मैं किसी को नहीं छोड़ूँगा। इसका शाब्दिक अर्थ है कि मैं किसी के प्रति नरमी नहीं दिखाऊँगा।

मैं किसी भी तरह की नरमी नहीं दिखाऊँगा। बिलकुल नहीं। आप यहाँ पर न बख्शने की कल्पना देख सकते हैं, जिसकी शुरुआत प्राचीन युद्धों में हुई थी, जिसमें पराजित दुश्मन को न मारना शामिल था।

और इसका यही मतलब है। मैं नहीं छोड़ूंगा। पॉल किस सजा की धमकी दे रहा है? क्या वह पश्चाताप न करने वालों को चर्च की संगति से बहिष्कृत कर देगा और उन्हें शैतान के हवाले कर देगा? जैसा कि उसने 1 कुरिन्थियों के अध्याय पाँच में कहा, क्या वह उन्हें चर्च के जीवन से केवल अस्थायी रूप से बाहर कर देगा? क्या वह उन्हें अलग-थलग करने के लिए कहेगा जैसा कि हम दूसरे थिस्सलुनीकियों तीन, छह और 1 कुरिन्थियों पाँच, नौ से 11 में देखते हैं? या वह ईश्वर से उन्हें कुछ शारीरिक बीमारी देने के लिए कहेगा? अब, ये सभी संभावनाएँ हैं, लेकिन संभावनाएँ हैं, और हम पॉल की इच्छित अनुशासनात्मक कार्रवाई की प्रकृति के बारे में निश्चित नहीं हो सकते हैं। जेरोम मर्फी ओ'कॉनेल ने कम से कम मददगार तरीके से सुझाव दिया कि यदि समुदाय ने उनकी चेतावनियों का जवाब नहीं दिया, तो उनके लिए एकमात्र विकल्प यह घोषित करना था कि उनके जीवन की गुणवत्ता, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, सुसमाचार के अनुरूप नहीं थी, और वे वास्तव में ईसाई नहीं थे।

जेरोम कहते हैं कि मर्फी ओ'कॉनेल पॉल के लिए एक भयानक निर्णय होगा। पॉल कहेगा, अरे, रुको दोस्तों, तुम वास्तव में ईसाई नहीं हो, और यह पॉल के लिए बहुत, बहुत मुश्किल बात होगी। या, जैसा कि सीके बैरेट सुझाव देते हैं, वे शैतान के दायरे में वापस चले गए होंगे।

स्पष्ट रूप से, प्रेरित कुरिन्थ के चर्च की संगति में अनैतिक आचरण को हमेशा के लिए बर्दाश्त नहीं कर सकता था। आज हमारे लिए एक शब्द, आज हमारे लिए एक सबक: हम अपने चर्चों में कितनी अनैतिकता बर्दाश्त करते हैं? हम संख्याओं में इतने उलझे हुए हैं कि हम खुद को अनुशासित करने के लिए तैयार नहीं हैं। इस बारे में सोचें: यदि आपके पास एक चर्च है, तो अपने आप से पूछें, यदि रविवार की सुबह मसीह प्रकट होते हैं, तो इनमें से कितने लोग वास्तव में तैयार होंगे? और आपके चर्च में एक हज़ार लोग हैं। अपने आप से पूछें, उनमें से कितने लोग वास्तव में प्रभु को जानते हैं? और पौलुस अपने सदस्यों की नैतिकता, जीवन, व्यवहार के बारे में बहुत चिंतित था।

आप देखिए, हम वैसे ही गाते हैं जैसे मैं हूँ, बिना किसी दलील के, लेकिन यह कि आपका खून मेरे लिए बहाया गया। सुनिए, हम यीशु के पास वैसे ही आते हैं जैसे हम हैं, लेकिन एक बार जब हम उसके पास आते हैं, तो हम वैसे नहीं रहते जैसे हम हैं। हम वैसे ही आते हैं जैसे हम हैं, लेकिन हम वैसे नहीं रहते जैसे हम हैं।

यही बात पॉल इन लोगों से कह रहा है। अगर मैं आऊँगा, तो मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे बीच संत नहीं होंगे, अशुद्धता, अनैतिकता, कामुकता नहीं होगी। मुझे उम्मीद है कि मुझे तुम्हारे बीच ऐसी कोई भी चीज़ नहीं मिलेगी क्योंकि अगर मैं ऐसा करता हूँ, तो यह वास्तव में इस बात का सबूत होगा कि तुम ईसाई नहीं हो।

मैं जल्दी से यह कहना चाहता हूँ: मुझे लगता है कि पाप करने वाले संतों के बारे में बात करना एक विरोधाभास है। इस बारे में सोचो। तुम कहते हो कि वह आदमी एक सच्चा झूठा है।

यह कैसा लगता है? यह कहना कैसा लगता है, अच्छा, वह बहुत ईमानदार चोर है? वह बहुत ईमानदार चोर है। वह सिर्फ चोरी करता है, लेकिन वह बहुत ईमानदार है। यह बात कानों को कैसी लगती है? यह इस तरह से काम नहीं करता।

लेकिन अगर हम पौलुस के शब्दों को लें, और अगर हम प्रेरितों के शब्दों को लें, तो यीशु का खून पापों से शुद्ध करता है। वह उनसे कह रहा है कि तुम्हारे बीच कोई अनैतिकता, कोई कामुकता, कोई अशुद्धता नहीं होनी चाहिए। वह उन्हें सूचीबद्ध करता है।

वह कहता है कि झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, गुस्सा, विवाद, निंदा, गपशप, अहंकार। मेरा मतलब है, इसके बारे में सोचो। क्या आज हमारे चर्चों में पवित्र गपशप नहीं है? और पॉल कहता है कि मैं उन पवित्र गपशपों को नहीं देखना चाहता।

उसने कहा कि मैं तुम्हारे साथ नरमी नहीं बरतूँगा। क्यों? क्योंकि तुम इस बात का सबूत मांग रहे हो कि मसीह मेरे ज़रिए बोल रहा है। अगर तुम सबूत चाहते हो, तो सबूत ही तुम्हें मिलेगा।

आप सबूत चाहते हैं कि मैं एक प्रेरित हूँ, और मैं आपको सबूत दिखाने जा रहा हूँ कि मैं एक प्रेरित हूँ। और इसका रूप ऐसा है जिसे वे समझ नहीं पाते। यह ऐसा रूप ले लेगा जिसे वे अभी तक नहीं समझ पाए हैं।

वास्तव में, हम अभी तक नहीं जानते कि यह क्या है, लेकिन पॉल बहुत, बहुत स्पष्ट था। चूँकि आप प्रमाण चाहते हैं या चाहते हैं, वे प्रमाण की तलाश कर रहे हैं कि मसीह उसमें बोल रहा है। कुरिन्थियों, वास्तविक प्रेरिताई, करिश्मा, परिष्कृत बयानबाजी, उच्च आध्यात्मिक अनुभव, जीवन और सेवकाई में विजयवाद, कमजोरी नहीं, के अपेक्षित मानदंडों में।

आप देखिए, उनके लिए यही सब कुछ है जो वे चाहते हैं। करिश्मा, बयानबाजी, उच्च आध्यात्मिक अनुभव, विजयवाद, लेकिन कमजोरी नहीं। लेकिन पॉल कहते हैं, मैं तुम्हें एक सबूत दिखाऊँगा।

वे इस बात का प्रमाण मांगते हैं कि मसीह पॉल के माध्यम से बोल रहा है। अपेक्षित मानदंडों के अभाव में, वे यह मानने से इनकार करते हैं कि मसीह की शक्ति उनके साथ पॉल की उपस्थिति के साथ है। निस्संदेह, मसीह कुरिन्थियों के बीच शक्तिशाली रहा है, लेकिन पॉल का यह कहने का क्या मतलब है कि मसीह उनके साथ व्यवहार करने में कमजोर नहीं है? कुरिन्थ में चर्च को वह निर्णायक प्रमाण मिलेगा जो वे चाहते हैं, लेकिन मसीह पॉल के माध्यम से उस तरह से बात नहीं करेगा जैसा वे चाहते हैं।

वे पौलुस के माध्यम से मसीह को बोलते हुए सुनेंगे, लेकिन उस तरीके से नहीं जिस तरह से वे चाहते हैं। वह अनुशासन का सामना करने की धमकी देता है, यह संकेत देने के लिए कि मसीह अपनी सेवकाई के माध्यम से उनके प्रति कमजोर नहीं है, बल्कि शक्तिशाली है। फिर, पद चार में, क्योंकि वास्तव में, वह कमजोरी में कूस पर चढ़ाया गया था, लेकिन परमेश्वर की शक्ति से जीवित है।

क्योंकि हम उसमें कमज़ोर हैं, लेकिन तुम्हारे साथ व्यवहार करते समय, हम परमेश्वर की शक्ति से उसके साथ रहते हैं। यह अपराधियों से मज़बूती से निपटेगा। लेकिन कुरिन्थ में कुछ ऐसे लोग हैं जो पौलुस के अधिकार को गंभीरता से नहीं लेते हैं।

वे इस बात का सबूत चाहते हैं कि मसीह उनसे बात कर रहा है, यानी वास्तव में मसीह ही है, एक संभावित एजेंट। उनके दुख की बात यह है कि उन्हें पता चलेगा कि उनके साथ उसका व्यवहार शक्तिशाली होगा, कमज़ोर नहीं। यह इस तरह से होता है।

हालाँकि प्रभु को कमज़ोरी के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया था, फिर भी वह परमेश्वर की शक्ति के कारण जीवित है। इसी तरह, पौलुस और उसके साथी उसके साथ कमज़ोर हैं, लेकिन वे परमेश्वर की शक्ति के कारण उसके साथ रहते हैं। यह शक्ति पौलुस के सेवकाई जीवन में प्रकट होती है, जिसमें वह अनुशासन भी शामिल है जिसे वह प्रेरितिक अधिकार के माध्यम से प्रशासित करता है।

अब, पौलुस उन्हें आत्म-परीक्षण करने के लिए कहता है। उसने कहा, अपने आप को जाँचो कि क्या तुम विश्वास में जी रहे हो। अपने आप को परखो।

क्या तुम नहीं जानते कि मसीह तुम में है? जब तक कि तुम परीक्षा में पास न हो जाओ। तुम देखते हो, इस चेतावनी को देखने के बाद, उन्हें चेतावनी देने के बाद, पौलुस अपने पाठकों से आग्रह करता है कि वे स्वयं की जाँच करें। मुझे जाँचने के बजाय स्वयं की जाँच करें।

तुम्हें जाँच की जरूरत है। पॉल यही कह रहा है। तुम ही हो जो मेरी जाँच कर रहे हो, लेकिन तुम्हें ही वास्तव में जाँच की जरूरत है।

अपने आप को जाँचो। और यह बहुत दिलचस्प है कि पौलुस ने इसे बहुवचन में लिखा है, अपने आप को। वे जाँचते हैं। उन्हें खुद को जाँचना है।

यह एक दूसरे की आलोचना करने का मामला नहीं है। पौलुस को उम्मीद है कि कुरिन्थ के लोग अपनी स्थिति सुधार लेंगे। जब वह उनसे मिलने जाता है, तो वह उनके साथ सख्ती से पेश नहीं आना चाहता।

चूँकि उन्होंने सबूत माँगा है, इसलिए अब वह उन्हें अपने ईसाई धर्म को साबित करने के लिए चुनौती देता है। उनका विश्वास उसके अपने विश्वास से असंबद्ध नहीं है। लेकिन पॉल को यह भी डर है कि वे उसकी दलील को अस्वीकार कर सकते हैं।

इसलिए, पाँचवीं से छठी आयत में, वह अपने नए दृष्टिकोण के साथ कुरिन्थियों पर पलटवार करता है। एक जोरदार तरीके से, मैंने दोहराया, अपने आप पर। वह लिखता है कि उन्हें खुद की जाँच करनी है और खुद को परखना है।

जाँचना और परीक्षण करना। दो अलग-अलग शब्द। पॉल नहीं।

यह निर्धारित करने के लिए कि क्या वे विश्वास में हैं। आप देखिए, वह जाँच का उपयोग करता है, शब्द पेराज़ो, जिससे आपको कोशिश, परीक्षण या प्रयास भी मिलता है। और फिर साबित करें, डोकुमाज़ो, यह साबित करने के लिए कि वे यहाँ वस्तुतः समानार्थी हैं।

बस थोड़ा सा जोर देकर अंतर है। बल्कि जोर देने में थोड़ा सा अंतर है। पहला किसी चीज़ की प्रकृति का परीक्षण करके उसे जानने के प्रयास को इंगित करता है।

जब वह कहता है, अपने आप को जाँचो। उत्तरार्द्ध किसी चीज़ की वास्तविकता को निर्धारित करने के लिए उसकी आलोचनात्मक जाँच है। इसलिए, कुरिन्थियों को इस बात के प्रमाण की जाँच करनी है कि वे सच्चे विश्वासी हैं।

जैसा कि 124 में बताया गया है, विश्वास में रहने का मतलब है आज्ञाकारिता में जीना और मसीह पर भरोसा करना। पौलुस एक अलंकारिक प्रश्न पूछता है जिसका उत्तर सकारात्मक होने की अपेक्षा करता है। क्या आपको एहसास नहीं है, निश्चित रूप से नहीं पता कि मसीह आप में है? यहाँ यह दिलचस्प है कि वह कहता है कि मसीह आप में है।

पौलुस उनसे वांछित व्यवहार प्राप्त करने का प्रयास करता है, जिसके लिए वह उन्हें यह बताता है कि वे कौन हैं। वे ऐसे लोग हैं जिनमें मसीह यीशु रहता है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें इस आयत को अलग तरीके से देखने की ज़रूरत है।

हालाँकि कई व्याख्याकार इसे व्यक्तिगत मानते हैं, और इसमें एक व्यक्तिगत आयाम है, लेकिन मुझे लगता है कि हम इस बात को समझने में चूक जाते हैं जब हम पॉल को यह कहते हुए देखते हैं, यीशु मसीह आप में है। बहुवचन, उन्हें बता रहा है, आपके बीच है। यह व्यक्तिगत रूप से उनमें है, लेकिन यह केवल व्यक्तिगत निवास नहीं है।

उन्होंने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि मसीह तुम्हारे बीच में है? और जो काम तुम करते हो, उससे यह तुममें नहीं दिखता। अगर ऐसा है, तो यह उनके व्यवहार में प्रकट होगा। अगर उन्हें एहसास होता है कि मसीह न केवल उनमें व्यक्तिगत रूप से रहता है, बल्कि मसीह उनके बीच में है, तो इसका उनके व्यवहार पर असर होना चाहिए।

जब तक कि, बेशक, आप परीक्षा में असफल न हो जाएँ। इसलिए, यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। और फिर श्लोक 7 में, वह कहता है, लेकिन हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि आप कुछ भी गलत न करें, ऐसा नहीं कि हम परीक्षा में पास हो जाएँ, बल्कि यह कि आप वही करें जो सही है, भले ही हम असफल लगें।

आप देखिए, पौलुस कभी भी अपने बारे में चिंतित नहीं रहता। उसकी दिलचस्पी अपने पाठकों की तरफ होती है। परमेश्वर से उसकी प्रार्थना उनके लिए पुनर्स्थापना और उन्नति की है।

उसने कहा, सुनो, मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। वे इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि हम या भगवान तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते। यही वह कहता है।

उनके लिए ईश्वर से उनकी प्रार्थना उनकी पुनर्स्थापना और उन्नति के लिए है। अतीत में कुछ व्याख्याकारों ने 'किसको' को 'आप' के रूप में लिया था, यह निष्कर्ष निकालते हुए कि या तो हम या वह, ईश्वर, आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते। लेकिन विद्वानों में वर्तमान आम सहमति यह है कि जो कोई भी अनंत का अभियोगात्मक विषय है, वह कुछ भी गलत नहीं करेगा।

इसलिए, पौलुस ने अपनी प्रार्थना की मूल सामग्री के रूप में इसे रिपोर्ट किया। हम प्रार्थना कर रहे हैं कि आप कुछ भी गलत न करें। आप देखिए, पूरक वाक्यांश, गलत और सही करना, इस संदर्भ में, चर्च के जीवन में क्या गलत है और क्या सही है, इस बात को परिभाषित करते हैं कि पौलुस के अनुसार उन्हें क्या करने की आवश्यकता है।

पौलुस की प्रार्थना का दोहरा उद्देश्य उन खंडों से संकेतित होता है। पहला खंड उसके नकारात्मक उद्देश्य को बताता है, न ही यह कि लोग देखेंगे कि पौलुस ने परीक्षा में खरा उतरा है। वह यह प्रार्थना नहीं करता कि उसकी प्रेरितिक प्रामाणिकता उसकी तीसरी यात्रा के दौरान उन कुरिन्थियों के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई करके सिद्ध हो।

उनकी प्रार्थना का दूसरा उद्देश्य यह है कि वे वही करें जो सही है। पॉल प्रार्थना करता है कि वे अपने आप पश्चाताप करेंगे और अपने तरीके सुधारेंगे। और वह स्वीकार करता है कि भले ही हम असफल लगें, पॉल खुशी-खुशी यह सबूत देगा कि मसीह उसके माध्यम से बोल रहा है।

आठवीं आयत में, आप फिर से देखते हैं कि पौलुस की सबसे बड़ी चिंता सत्य के लिए है। आप जानते हैं, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम ऐसे समय में जी रहे हैं जहाँ सत्य का कोई महत्व नहीं है, चाहे आध्यात्मिक रूप से हो या अन्य रूप से। किसी ने कहा कि यह वह सत्य नहीं है जिसे मैं नहीं जानता जो मुझे परेशान करता है।

यह वह सत्य है जिसे मैं जानता हूँ। और यह कहकर, देखो, मैं उस सत्य के साथ क्या कर रहा हूँ जिसे हम जानते हैं? सत्य को जानना ही पर्याप्त नहीं है। हमें सत्य को समझना चाहिए, लेकिन सत्य को समझना ही पर्याप्त नहीं है।

हमें सत्य के अनुसार जीना चाहिए। यानी, हमारे जीवन में सत्य प्रतिबिंबित होना चाहिए। मसीह के लिए एक प्रेरित के रूप में पौलुस की सबसे बड़ी चिंता सत्य के लिए है।

यही उसकी प्रार्थना का कारण है। वह कहता है कि वह सत्य के विरुद्ध कुछ भी करने में सक्षम नहीं है, लेकिन वह केवल सत्य के लिए कार्य करने का साहस करता है। मेरा मतलब है, यह लगभग सत्य के सर्वोच्च होने जैसा लगता है, लेकिन पॉल के लिए, यहाँ सत्य को सुसमाचार के बराबर माना जाना चाहिए।

सुसमाचार पर न केवल विश्वास किया जाना चाहिए, बल्कि यह जीवन में आचरण करने योग्य भी है। पौलुस चाहता है कि सुसमाचार की सच्चाई कुरिन्थियों के जीवन में प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित हो। प्रेरित सत्य के विरुद्ध कुछ भी करने में असमर्थ है क्योंकि वह मसीह का सत्य है।

यही हम पद 8 में देखते हैं। और फिर पद 9 में, पौलुस कुरिन्थियों के लिए अपनी चिंता व्यक्त करना जारी रखता है, और वह पद 9 में पुष्टि करके ऐसा करता है, यही हमारी प्रार्थना है, कि तुम सिद्ध बनो। सारांश के रूप में, पद 5 से 9 में, अपनी चेतावनी देने के बाद, पौलुस अपने पाठकों से आग्रह करता है कि वे उसके बजाय खुद की जाँच करें या खुद को परखें। उन्हें खुद को परीक्षण में समझना चाहिए।

उन्हें खुद को साबित करना चाहिए। क्या वे खुद को पूरी तरह से नहीं जानते कि मसीह उनमें और उनके बीच में है? जब तक कि वे वास्तव में बिना सबूत के न हों। श्लोक 9 में, वह कहता है कि जब वह कमज़ोर होता है तो वह खुश होता है, और उसके पाठक मजबूत होते हैं।

वह उनकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करता है; अर्थात्, वे जो गलत है उसे सुधार रहे हैं, और वे जो सही है उसे कर रहे हैं। अब, हम पद 10 से 14 में पौलुस की अंतिम अपील पर आते हैं। इसलिए, मैं ये बातें तब लिखता हूँ जब मैं तुमसे दूर रहता हूँ ताकि जब मैं आऊँ, तो मुझे उस अधिकार का उपयोग करने में कठोरता न दिखानी पड़े जो प्रभु ने मुझे निर्माण करने के लिए दिया है, न कि तोड़ने के लिए।

अंत में, भाइयो और बहनो, अलविदा। सब कुछ व्यवस्थित करो। मेरी अपील सुनो।

एक दूसरे से सहमत हो जाओ। शांति से रहो, और प्रेम और शांति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। पवित्र कुंजियों से एक दूसरे को नमस्कार करो।

सभी संत आपको नमस्कार करते हैं। हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा, परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति आपके साथ रहे। कुरिन्थियों को खुद को स्वस्थ आध्यात्मिक स्थिति में लाने के लिए क्या करना चाहिए? पौलुस अब एक नुस्खा लिखता है, जिसे उन्हें दैनिक आधार पर लेना शुरू करना है।

यह ऐसा है जैसे यह एक दैनिक खुराक है। इसे ले लो। श्लोक 11 और 12।

पवित्र कुंजियों से एक दूसरे को नमस्कार करो। सभी संत तुम्हें नमस्कार करते हैं। अंत में, भाइयों और बहनों, अलविदा।

सब कुछ व्यवस्थित करो। मेरी अपील सुनो। एक दूसरे से सहमत हो जाओ।

शांति से जियें। यही वो दैनिक खुराक है जिसकी उन्हें ज़रूरत है। मैं आपको बता दूँ, अगर हमारी मण्डलियों में ये सब होगा, तो हमारी मण्डलियाँ प्रभु में आनन्द से भर जाएँगी।

मतभेद कम होंगे। बहस कम होगी। चीजों को व्यवस्थित करें।

मेरी अपील सुनो। एक दूसरे से सहमत हो जाओ। शांति से रहो।

फिर एक दूसरे को नमस्कार करें। उन्हें चीजों को व्यवस्थित करना है। उसकी अपील सुनें।

एक दूसरे के साथ सहमत हों और शांति से रहें। संभवतः, वे एक दूसरे के साथ-साथ प्रेरित पौलुस के साथ भी थे। क्या आप जानते हैं कि वह क्या कहता है? पौलुस कहता है कि यदि आप ये काम करते हैं, यदि आप ये काम करते हैं, तो परमेश्वर, जो प्रेम और शांति का लेखक है, आध्यात्मिक शक्ति और आशीर्वाद के प्रकटीकरण में आपके साथ रहेगा।

हमारी ज़्यादातर मंडलियों में परमेश्वर के न चलने का कारण यह है कि हम हर संभव कोशिश कर रहे हैं, फिर भी हम परमेश्वर को आगे बढ़ते हुए नहीं देख पा रहे हैं। क्या इसका कारण यह है कि हम शांति से रह रहे हैं? क्या हम एक-दूसरे से सहमत हैं? हम गुटों से निपटते हैं। क्या हम सब सत्य सुन रहे हैं? क्या हम परमेश्वर के वचन को सुन रहे हैं? आप जानते हैं, एक बात है सुनना, और दूसरी बात है सुनना। बहुत से लोग सुनते हैं, लेकिन बहुत कम लोग सुनते हैं।

इसलिए कोई बात करेगा और कहेगा, मैंने यही कहा था लेकिन मैंने वह नहीं सुना क्योंकि वे वास्तव में सुन नहीं रहे हैं। मेरी अपील सुनो। एक दूसरे से सहमत हो जाओ।

आप देखिए, पौलुस अपने सुसमाचार का सारांश यहीं दे रहा है। जितना संभव हो सके और जितना संभव हो सके, एक दूसरे के साथ शांति से रहें। फिर उन्हें एक दूसरे के लिए अपनी दोस्ती और स्नेह दिखाना चाहिए, पवित्र चुंबन के साथ एक दूसरे का अभिवादन करके, जो उन्होंने उस समय किया था या यह एक नुस्खा है।

यह अधिकांश परेशान कलीसियाओं के लिए पर्याप्त उपाय होना चाहिए। हालाँकि, कुरिन्थियों को यह बताना कि उन्हें अपनी आध्यात्मिक बीमारियों से ठीक होने के लिए क्या करना चाहिए, पर्याप्त नहीं है। पौलुस को उन्हें उन संसाधनों की याद दिलानी पड़ी जिनके द्वारा वे अपनी दवा ले सकते थे।

वह अपने पत्र का समापन दो संसाधनों की ओर इशारा करते हुए करता है जो प्रभु के लोगों के पास हैं जो उन्हें वह करने में सक्षम बनाते हैं जो परमेश्वर चाहता है। वे क्या हैं? तेरहवीं और चौदहवीं आयतें। उसने कहा, प्रभु की कृपा, प्रभु की कृपा तुम्हारे साथ रहे।

श्लोक तेरह। प्रभु की कृपा आप पर बनी रहे। आप देखिए, संतों की संगति बहुत महत्वपूर्ण है, और न केवल संतों की संगति, जो बहुत महत्वपूर्ण है, एक मानव संसाधन है।

दूसरा, जो सबसे बड़ा संसाधन है, वह है ईश्वर की कृपा। अपने अंतिम आशीर्वाद में, पॉल प्रार्थना करता है कि मसीह की कृपा, पिता का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति उसके पाठकों के साथ हो। अब, क्या यह दिलचस्प नहीं है कि पॉल इसे उलट देता है?

वह मसीह के अनुग्रह, प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह और परमेश्वर के प्रेम से शुरू करता है। आप जानते हैं, आम तौर पर, हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा से शुरू करते हैं, लेकिन पॉल, प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह, परमेश्वर के प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति के बारे में कहता है। इसलिए, यहाँ, वह यह नहीं कहता कि पिता नंबर एक है, यीशु नंबर दो है, और पवित्र आत्मा नंबर तीन है।

वह चीजों को इधर-उधर करता है क्योंकि उसके मन में, अनिवार्य रूप से, वे एक ही हैं। प्रभु की कृपा किसी भी मांग के लिए पर्याप्त है। पिता का प्रेम, जो भी हमें उसकी समझ, सहानुभूति और देखभाल का आश्वासन देता है, और सक्षम बनाने और निर्देशन में हमारे साथ पवित्र आत्मा की संयुक्त भागीदारी हमें उपाय लागू करने और आध्यात्मिक उपचार और बहाली लाने में सक्षम बनाने के लिए पर्याप्त से अधिक है।

और जैसे-जैसे हम 2 कुरिन्थियों के अंत में आते हैं, मैं श्रोता पर पॉल के उसी आशीर्वाद का उच्चारण करता हूँ: प्रभु यीशु मसीह की कृपा, ईश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की संगति आप सभी के साथ हो।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर उनके शिक्षण में कहा गया है। यह सत्र 14, 2 कुरिन्थियों 13, समापन अपील है।